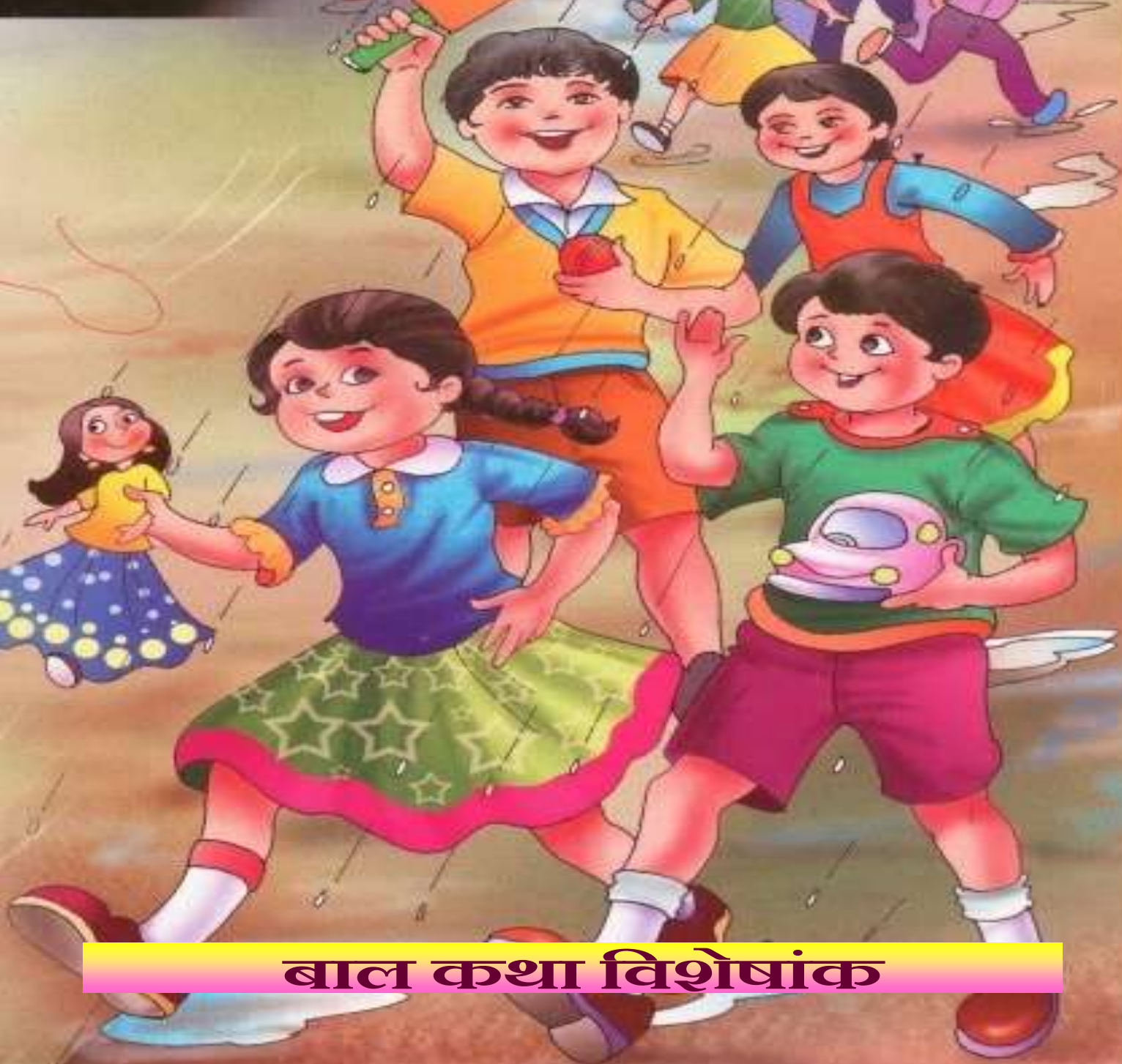




बढ़ते कदम

वर्ष-15
अंक- 02
2016

पूर्व रेलवे, मालदा मंडल की सृजनात्मक हिन्दी ई-मासिकी



बाल कथा विशेषांक

भारत के संविधान में राजभाषा

अनुच्छेद 346. एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच या किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा--

संघ में शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाने के लिए तत्समय प्राधिकृत भाषा, एक राज्य और दूसरे राज्य के बीच तथा किसी राज्य और संघ के बीच पत्रादि की राजभाषा होगी :

परंतु यदि दो या अधिक राज्य यह करार करते हैं कि उन राज्यों के बीच पत्रादि की राजभाषा हिंदी भाषा होगी तो ऐसे पत्रादि के लिए उस भाषा का प्रयोग किया जा सकेगा।

अनुच्छेद 347. किसी राज्य की जनसंख्या के किसी भाग द्वारा बोली जाने वाली भाषा के संबंध में विशेष उपबंध-

यदि इस निमित्त मांग किए जाने पर राष्ट्रपति का यह समाधान हो जाता है कि किसी राज्य की जनसंख्या का पर्याप्त भाग यह चाहता है कि उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा को राज्य द्वारा मान्यता दी जाए तो वह निदेश दे सकेगा कि ऐसी भाषा को भी उस राज्य में सर्वत्र या उसके किसी भाग में ऐसे प्रयोजन के लिए, जो वह विनिर्दिष्ट करे, शासकीय मान्यता दी जाए।

अध्याय 3 - उच्चतम न्यायालय, उच्च न्यायालयों आदि की भाषा

अनुच्छेद 348. उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों में और अधिनियमों, विधेयकों आदि के लिए प्रयोग की जाने वाली भाषा--

(1) इस भाग के पूर्वगामी उपबंधों में किसी बात के होते हुए भी, जब तक संसद् विधि द्वारा अन्यथा उपबंध न करे तब तक--

(क) उच्चतम न्यायालय और प्रत्येक उच्च न्यायालय में सभी कार्यवाहियां अंग्रेजी भाषा में होंगी,

(ख)) i) संसद् के प्रत्येक सदन या किसी राज्य के विधान-मंडल के सदन या प्रत्येक सदन में पुरःस्थापित किए जाने वाले सभी विधेयकों या प्रस्तावित किए जाने वाले उनके संशोधनों के,

(ii) संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा पारित सभी अधिनियमों के और राष्ट्रपति या किसी राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित सभी अध्यादेशों के ,और

(iii) इस संविधान के अधीन अथवा संसद या किसी राज्य के विधान-मंडल द्वारा बनाई गई किसी विधि के अधीन निकाले गए या बनाए गए सभी आदेशों, नियमों, विनियमों और उपविधियों के, प्राधिकृत पाठ अंग्रेजी भाषा में होंगे।

(2) खंड (1) उपखंड (क) में किसी बात के होते हुए भी, किसी राज्य का राज्यपाल राष्ट्रपति की पूर्व सहमति से उस उच्च न्यायालय की कार्यवाहियों में, जिसका मुख्य स्थान उस राज्य में है, हिन्दी भाषा का या उस राज्य के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाली किसी अन्य भाषा का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा:

परंतु इस खंड की कोई बात ऐसे उच्च न्यायालय द्वारा दिए गए किसी निर्णय, डिक्री या आदेश को लागू नहीं होगी।

(3) खंड (1) के उपखंड (ख) में किसी बात के होते हुए भी, जहां किसी राज्य के विधान-मंडल ने, उस विधान-मंडल में पुरःस्थापित विधेयकों या उसके द्वारा पारित अधिनियमों में अथवा उस राज्य के राज्यपाल द्वारा प्रख्यापित अध्यादेशों में अथवा उस उपखंड के पैरा (iv) में निर्दिष्ट किसी आदेश, नियम, विनियम या उपविधि में प्रयोग के लिए अंग्रेजी भाषा से भिन्न कोई भाषा विहित की है वहां उस राज्य के राजपत्र में उस राज्य के राज्यपाल के प्राधिकार से प्रकाशित अंग्रेजी भाषा में उसका अनुवाद इस अनुच्छेद के अधीन उसका अंग्रेजी भाषा में प्राधिकृत पाठ समझा जाएगा।

विषय वस्तु

प्रसंगवश—	
—रामाशीष सिंह —	3
मां की चालाकी	
— सुप्रिया आर.	4
अगर वहन आता तो—	
— विनोद कुमार त्रिपाठी	6
लालच का फल —	
— कृतिका तुलसी	9
बुद्धि का बल—	
— डेजी सरकार विश्वास	10
गडू की बुद्धिमानि	
— स्मृति कुमारी	11
साधू का हठ	
— धर्मेन्द्र कुमार	12
रीछ का आतंक	
—कुमारी ऋचा	13
चुटकुले	
— मिन्टू कुमार —	14
हनुमानजी की कबड्डी	
— बृजमोहन प्रसाद	15
असफलता के कारण—	
— श्वेता त्रिपाठी	16
हरचनमा—	
— शैलेन्द्र राम	17
बादल—	
— शुभी प्रज्ञा	18
डूबता सूरज —	
— सत्य प्रकाश दूबे	18
भविष्य की आशा	
चित्र वीथिका	19-20

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं इससे संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

संपर्क सूत्र

संपादक- बढते कदम
संपादक, बढते कदम
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
पुर्नोरेलवे मालदा
पुर्नोरेलवे/मालदा
फो. 72190/72192 (रेलवे)
फोन- 72190/72192 (रेलवे)
Email— rajbhasha.malda@gmail.com
Email— Rajbhasha.malda@gmail.com
Web: www.ier.indianrailway.gov.in

बच्चों के चाचा नेहरू

किसी ने कहा है कि तकदीर तो पत्थर की भी बदल सकती है, शर्त यह है कि उन्हें करीने से तराशा जाय। बच्चों का मन भी ठीक वैसा ही होता है। बच्चों के बाल सुलभ मन पर किसी भी बात का प्रभाव गहरा और दीर्घकालिक पड़ता है। बच्चों की बात हो और चाचा नेहरू का जिक्र न हो यह भला कैसे हो सकता है। हर वर्ष 14 नवम्बर को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू के जन्म के रूप में बाल दिवस मनाया जाता है। पं. जवाहर लाल नेहरू को 'चाचा नेहरू' कहा जाता था और उन्हें बच्चों से बहुत प्यार था।

बच्चे जवाहर लाल नेहरू को चाचा इसलिए कहते थे क्योंकि बच्चों को चाचा जितना प्यारा कोई नहीं होता। ये पिता से डरते हैं, दादा-दादी किस्से-कहानी तो सुना सकते हैं लेकिन आइसक्रीम खिलाने, घुमाने नहीं ले जा सकते लेकिन वे चाचा की पीठ पर चढ़ सकते हैं, खेल सकते हैं, सीख सकते हैं, चाचा शिक्षक भी है और दोस्त भी।

कहा जाता है कि पंडित नेहरू बच्चों से बेहद प्यार करते थे इसलिए बाल दिवस मनाने के लिए उनका जन्मदिन चुना गया। पंडित नेहरू भारत के पहले प्रधानमंत्री थे और तीन मूर्ति भवन प्रधानमंत्री का सरकारी निवास था। एक दिन तीन मूर्ति भवन के बगीचे में लगे पेड़-पौधों के बीच से गुजरते हुए घुमावदार रास्ते पर नेहरू जी टहल रहे थे। उनका ध्यान पौधों पर था। वह पौधों पर छाई बहार देखकर खुशी से निहाल हो ही रहे थे तभी उन्हें एक छोटे बच्चे के रोने की आवाज सुनाई दी। नेहरू जी ने आसपास देखा तो उन्हें पेड़ों के बीच एक-दो माह का बच्चा दिखाई दिया जो ऊंचे स्वर में रो रहा था। नेहरू जी ने मन ही मन सोचा - इसकी मां कहां होगी? उन्होंने इधर-उधर देखा। वह कहीं भी नजर नहीं आ रही थी। उन्होंने सोचा शायद वह बगीचे में ही कहीं माली के साथ काम कर रही होगी। नेहरू जी यह सोच ही रहे थे कि बच्चे ने रोना तेज कर दिया। इस पर उन्होंने उस बच्चे की मां की भूमिका निभाने का मन बना लिया।

नेहरू जी ने बच्चे को उठाकर अपनी बांहों में लेकर उसे थपकियां दीं, झुलाया तो बच्चा चुप हो गया और मुस्कुराने लगा। बच्चे को मुस्कुराते देख चाचा खुश हो गए और बच्चे के साथ खेलने लगे। जब बच्चे की मां दौड़ते हुए वहां पहुंची तो उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ। उसका बच्चा नेहरू जी की गोद में मंद-मंद मुस्कुरा रहा था।

— रामाशीष सिंह

निःशुल्क वितरण हेतु

संरक्षक	परामर्श	प्रधान संपादक	संपादक	कार्यकारी संपादक	सहयोग
मोहित कुमार सिन्हा मंडल रेल प्रबंधक	विजय कुमार साह अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक	रामाशीष सिंह राजभाषा अधिकारी(प्रा.)	सच्चिदानंद व. अनुवादक	इंद्र ज्योति राय क. अनुवादक	दयामय दास, कनिष्ठ इंजीनियर

मां की चालाकी

अरूणाचल के गांव खांदूक की बहुत पुरानी बात है। उस गाँव में एक बुजुर्ग दंपति रहते थे। उनका नाम खड़िया और लुबनी था। वे दोनों बड़े दुखी थे क्योंकि उनके बच्चे नहीं थे। दोनों कभी-कभी बहुत उदास हो जाते थे और सोचते थे हम ही हैं जो अकेले जिन्दगी गुजार रहे हैं। एक बार खड़िया ने लुबनी से कहा - मुझे अकेले रहना अब अच्छा नहीं लगता है क्यों न हम एक भेड़ को घर ले आये ? उसी दिन दोनों पास के हाट में गये और एक भेड़ खरीदकर घर ले आये। चार आने में ही भेड़ खरीद कर ले आये थे इसीलिये वे उसे चरन्नी नाम से पुकारते थे।

भेड़ के साथ लुबनी बहुत खुश थी, वह उसे अपने हाथों से खिलाती, नहलाती और अपने खटिए के पास सुलाती थी जहाँ भी वह जाती अपने साथ ले जाती। थोड़े ही दिन में भेड़ बहुत शैतानी करने लगी। किसी के भी घर में घुस जाती थी, और जो भी मिलता खाने लगती। आस-पास रहनेवाले बहुत तंग हो गये और घर आकर भेड़ के बारे में शिकायत करने लगे। खड़िया को यह सुनकर बहुत गुस्सा हुआ और लुबनी को कहा- जाओ इसे जंगल में छोड़कर आओ। लुबनी ने कहा— यह क्या कह रही हो। उसने कहा - ऐसा करते हैं चरवाहे के साथ उसे जंगल में चरने के लिए भेज देते हैं।

चरवाहे के साथ भेड़ जंगल जाने लगी। लेकिन थोड़े ही दिन में चरवाहा भी बहुत तंग हो गया - भेड़ उसका कहा नहीं मानती थी। उसने उसे चराने ले जाने से इन्कार कर दिया। भेड़ फिर से घर में रहने लगी और अब उसके नन्हें नन्हें बच्चे हो गये और बच्चे भी सबको तंग करने लग गये। अब लुबनी भी परेशान हो गई। उसने कहा— मैं और इनकी देखभाल नहीं कर सकती। बूढ़े खड़िया ने भेड़ और उसके बच्चों को जंगल में छोड़ दिया। भेड़ और उसके बच्चे जंगल में रहने लगे।

एक दिन अचानक एक शेरनी की नजर भेड़ के बच्चों पर पड़ी, उसने उन्हें खाने के बारे में सोचा। शेरनी को देखकर भेड़ को समझ में आ गया कि शेरनी क्या सोच रही है। भेड़ को बहुत डर लगा पर वह अपनी सारी हिममत जुटाकर शेरनी के पास गई और अपना सर झुकाकर उसने कहा - मौसी प्रणाम। अब शेरनी तो बहुत अचम्भे में पड़ गई। ये भेड़ तो मुझे मौसी कहकर पुकार रही है। उसके बच्चों को कैसे खाऊँ? शेरनी ने कहा - तू कहाँ रहती है ? भेड़ ने कहा — क्या कहूँ मौसी, रहने के लिये कोई जगह ही नहीं है हमारे पास। शेरनी ने कहा - तो तेरे पास रहने के लिये कोई जगह नहीं है ? तुम ऐसा करो - मेरे साथ चलो, मेरे पास दो माँद हैं। एक में तू अपने बच्चों के साथ रह जाना। भेड़ शेरनी के पीछे-पीछे चल दी। उसे पता था शेरनी मौसी कहकर पुकारने से बड़ी खुश हुई थी और अब वह उसके बच्चों को नहीं खायेगी।

शेरनी के माँद के पास दूसरे माँद में अपने बच्चों के साथ वे तीनों रहने लगे। शेरनी भी उसे तंग नहीं करती थी। कुछ दिनों के बाद शेरनी को जब बच्चे हुए, शेरनी को भेड़ के बच्चों को खाने के लालसा बढ़ गई। बच्चे पैदा होने के बाद वह शिकार करने के लिए नहीं जा पा रही थी। भूख भी उसे और ज्यादा लगने लगी थी। भेड़ शेरनी के आँखों की ओर देखती और मन ही मन चिन्तित हो उठती- वह शेरनी के पास जाकर मौसी मौसी कहती और बातें करती रहती ताकि उसकी नियत बदल जाये। शेरनी उससे कहती — तुम मेरे बच्चों का कोई नाम रख दो। भेड़ ने कहा - एक का नाम एक टीसू, दूसरे का नाम टूना। शाम होते ही शेरनी ने भेड़ से कहा - तुम तीनों अगर हमारे साथ सोते तो बड़ा अच्छा होता और अगर तीनों का आना संभव नहीं हो तो किसी एक को भेज दो। अब भेड़ बहुत परेशान हो गई। क्या कहूँ शेरनी से? भेड़ के बड़े बेटे ने अपनी माँ को चिन्तित देखकर कहा - अम्मा, तू चिन्ता मत कर। मैं जाऊँगा वहाँ सोने।

बाधिन के माँद में जाकर उसने कहा - दादी दादी, मैं आ गया। शेरनी बड़ी खुश हुई। उसने कहा - तू उस किनारे सो जा...। भेड़ का बेटा लेट गया लेकिन डर के कारण उसे नींद नहीं आ रही थी। थोड़ी देर के बाद वह उठकर शेरनी के पास जाकर उसे देखने लगा। शेरनी गहरी नींद में सो रही थी। उसने ने धीरे से टीसू को उठाया और अपनी जगह उसे

लिटाकर खुद उसकी जगह पर लेट गया। जैसे ही आधी रात हुई, शेरनी की नींद खुल गई - वह माँद के किनारे धीरे-धीरे पहुँची पर आँखों तब भी नींद रहने के कारण ठीक से देख नहीं पा रही थी, उसने तुरन्त टीसू को मारकर उसे खाकर सो गई। जैसे ही सुबह हुई, भेड़ के बेटे ने कहा - दादी, मैं अब जा रहा हूँ।

शेरनी चौंक गई - ये तो ज़िन्दा है - तो मैंने किसको खाया ? वह तुरन्त अपने बच्चों की ओर देखने लगी — कहाँ गया मेरा टीसू ? शेरनी गुस्से से छटपटा रही थी। उसने कहा - आज रात को आ जाना सोने के लिए। उस रात को जब भेड़ का बेटा पहुँचा सोने के लिए, उसने देखा शेरनी अपनी पूँछ से टूना को अच्छे से लपेटकर लेटी थी। अब वह सोच में पड़ गया। शेरनी ने कहा— जा, उस किनारे जाकर सो जा। वह उस किनारे जाकर लेट गया लेकिन उसे नींद नहीं आ रही थी। वह धीरे से माँद से बाहर आ गया और चारों ओर देखने लगा। उसे एक बड़ा सा कट्टू दिख गया, उसने उस कट्टू को उठाकर माँद के किनारे पर रख दिया और खुद अपनी माँ के पास चला आया। सुबह होते ही वह शेरनी के पास जाकर कहा - दादी, अब मैं जा रहा हूँ। शेरनी बहुत गुस्से से उस की ओर देखने लगी। वह धीरे-धीरे माँद से बाहर निकल आया और फिर तेज़ी से अपनी माँ के पास पहुँचा - अब शेरनी हमें नहीं छोड़ेगी - चलो, जल्दी चलो, यहाँ से निकल पड़ते हैं। भेड़ अपने बच्चों को लेकर भागने लगी। भागते-भागते बहुत दूर पहुँच गई। उसने बच्चों से कहा - थोड़ी देर हम तीनों पेड़ के नीचे आराम कर लेते हैं - पर भेड़ के बेटे ने कहा - माँ, शेरनी तो बहुत तेज़ दौड़ती है, वह तो अभी पहुँच जायेगी। उस ने कहा - क्यों न हम इस पेड़ पर चढ़ जायें? भेड़ ने कहा - हाँ, यह ठीक है - चलो, हम तीनों इस पेड़ पर चढ़ जाते हैं। वे तीनों पेड़ पर चढ़ गये और आराम करने लगे।

उधर शेरनी माँद में पहुँची। उसने इधर देखा, उधर देखा, बाहर आई और उसके बाद भेड़ के पैरों के निशान देखकर समझ गई कि वे तीनों किस दिशा में गये हैं। उसी को देखते हुए शेरनी चलती रही, फिर दौड़ती रही। उसे ज्यादा समय नहीं लगा उस पेड़ के पास पहुँचने में। पैरों के निशान पेड़ तक ही थे और भेड़ों की गंध भी तेज़ हो गयी थी। शेरनी ने ऊपर की ओर देखा। अच्छा, तो यहाँ बैठे हो सब और बोली - अभी तुम तीनों को मैं खा जाऊँगी - अभी ऊपर आती हूँ। भेड़ के बच्चे डरके माँ से लिपट गये। भेड़ ने कहा - अरे, डरते क्यों हो ? जब तक हम पेड़ के ऊपर बैठे हैं वह हमें खा नहीं सकती - उसने जोर से कहा - दो तो डंडा। शेरनी ने सोचा पेड़ के ऊपर भेड़ के पास डंडा कहाँ से आयेगा ? शेरनी ने कहा - डंडा तुझे कहाँ से मिला ? बकरी ने कहा - ये ले डंडा कहकर भेड़ ने ऊपर से एक डंडा फेंका जो शेरनी के पीठ पर गिरा। शेरनी ने सोचा डंडा तो डंडा ही है - चोट तो लगती है - वह वहाँ से हट गई। लेकिन पेड़ के आस पास ही रही। अब भेड़ कैसे अपने बच्चों को लेकर नीचे उतरे ? भेड़ मन ही मन बहुत परेशान हो रही थी। उधर शेरनी परेशान थी यह सोचकर कि कब तक उसे भेड़ों के इंतजार में पेड़ के नीचे रहना पड़ेगा?

तभी शेरनी ने देखा वहाँ से तीन चार बाघ जा रहे हैं। सबसे जो बड़ा बाघ था उसका नाम था भांग्चुक खाप। शेरनी उसके पास गई और उस पेड़ की ओर संकेत किया जिस पर भेड़े बैठी थी। भांग्चुक खाप तो बहुत खुश हो गया, वह अपने साथियों को साथ लेकर पेड़ के नीचे आकर खड़ा हो गया। भेड़ अपने बच्चों से कह रही थी - डर किस बात का ? ये सब नीचे खड़े होकर ही हमें देखते रहेंगे। लेकिन तभी उसने देखा कि भांग्चुक खाप पेड़ के नीचे खड़ा हो गया, उसके ऊपर शेरनी, शेरनी के ऊपर और एक बाघ, उसके ऊपर.....अब तो चौथा बाघ पेड़ के ऊपर तक आ जायेगा भेड़ अब डर गई थी, कैसे बचाये बच्चों को - तभी उसके बेटे ने कहा - दो तो डंडा तेमा मारियो तुई के बंडा। ये सुनकर भांग्चुक खाप जो सबसे नीचे था, भागने लगा, और जैसे ही वह भागने लगा, बाकी सब बाघ धड़ाम धड़ाम ज़मीन पर गिरने लगे। गिरते ही सभी बाघ भागने लगे। सबको भागते देख शेरनी भी भागने लगी - भेड़ ने कहा - चलो बच्चों, अब हम भी यहाँ से भाग जाए, नहीं तो शेरनी फिर से आ जायेगी।

— सुप्रिया आर.

अगर वह न आता तो

समूचे शहर में रात का कर्फ्यू लगा है। शाम को सात बजे के बाद दो आदमियों से अधिक को एक साथ निकलना मना है। उल्लंघन करने वालों को देखते ही गोली मारने का आदेश है। बम के धमाके फिर भी सुनाई पड़ते हैं। कुछ लोग स्वर्ग को प्यारे होते रहते हैं। दंगों, खून, आतंक व हत्या की जैसे इस शहर से पुरानी पहचान हो गई है। हर दो सौ गज की दूरी पर चितकबरी वर्दी के नौजवान कारतूस से भरी बंदूक लिए ड्यूटी पर तैनात हैं। शहर में रेड एलर्ट है। एहतियात की सभी सावधानियां बरती जा रही हैं।

उसकी सांसें थम रही हैं। जीवन के प्रति आशा हर पल कम होती जा रही है। दर्द शुरू होते ही असह्य हो गया है। बचने की उम्मीद कम हो गई है। पास ही खड़ी नवयौवना पत्नी की आंखों से अश्रुओं की अविरल धारा जारी है। शायद जोर से चिल्ला कर नहीं रोना चाहती हैं मगर इस अचानक परिस्थितिजन्य विपदा की तीव्रता सह भी नहीं पा रही है। जीवन के प्रति उसमें जो विश्वास था, वह डगमगा रहा है। क्या होगा इन दोनों बच्चों का...? नहीं...नहीं। ईश्वर मेरी इतनी बड़ी परीक्षा नहीं ले सकता। क्या उसके भीतर मेरे प्रति थोड़ी सी भी करुणा नहीं है?

“पा...पा...नी” एक टूटता, दर्द भरा स्वर उभरा हरदयाल के मुख से। वह दौड़कर पानी लाने चली। गुमसुम दोनों छोटे बच्चे निर्विकार भाव से पिता के बिस्तर पर बैठे हैं। उनकी समझ में कुछ नहीं आ रहा है कि उनको क्या हो गया है! पत्नी ने पानी लाकर पिलाया। जल की जीवनदायिनी शक्ति का हरदयाल पर असर हुआ और डूबती सांसें उबरने लगीं। शरीर का ठंडा होना रुक गया। “सुनीता, मुझे जल्दी डॉक्टर के पास ले चलो। शायद बच जाऊं। मुझे जल्दी ले चलो। थोड़ी भी देरी हुई तो मैं बचूंगा नहीं। आह, ये दर्द अब सहा नहीं जाता, आह...”

दर्द की तभी एक तीव्र पीड़ा ने हरदयाल को बेहोश कर दिया। एक बार मन हुआ कि सुनीता बुक्का फाड़ कर चिल्लाए, पर वह ऐसा नहीं कर पाई। पागलों की भांति बेचैन होकर वह दरवाजे तक गई। खोल कर देखा तो पूरी सड़क सुनसान थी। पास की गली में कोई कुत्ता अपनी भयानक कर्कश आवाज में रो रहा था। एक अजीब भय, अपशकुन की आशंका एवं अनिष्ट की संभावना ने उसे डरा दिया। भाग कर वह घर के भीतर छुप जाना चाहती थी मगर भीतर तो पति की हालत प्रति पल बिगड़ती जा रही थी।

दरवाजे का पल्ला पकड़े वह कुछ पल जड़-सी खड़ी रही। उसकी चेतना ने सचेत किया — पल भर की देरी भी उसके पति का जीवन छीन सकती है। साहस करके वह लगभग दौड़ते हुए पास के मकान तक पहुंची। दरवाजा खटखटाया। किसी महिला ने भीतर से पूछा-“कौन है?”

“मैं...मैं...हूं -- सुनीता?”

उस महिला ने आकर दरवाजा खोला- अरे! क्या हुआ तुम्हें? इतनी रात गए तुम पागलों की भांति बदहवास-सी क्यों हो?”

“चाची, मुन्ना के पिता के पेट में जोरों का दर्द शुरू हो गया है। हालत अत्यंत निराशाजनक हो गई है। उनका दर्द इतना भयानक है कि वह बार बार बेहोश हो जाते हैं। होश आने पर इतनी बुरी तरह छटपटाते हैं कि देख कर मेरी छाती फटती है।”

“अरे! यह तो बहुत बुरा हुआ। अरे! किसी डॉक्टर-वॉक्टर को क्यों नहीं दिखाती?”

“इसीलिए तो आई हूं, चाची! मोहन और शैलेश को कहिए ना उन्हें डॉक्टर तक पहुंचा दें।”

तभी मोहन वहां आ पहुंचा। आते ही पूछा- “क्या हुआ भाभी तुम्हें?”

मोहन की मां ने कहा- “अरे! हरदयाल की तबियत अचानक खराब हो गई है। किसी डॉक्टर के पास उसे ले जाना है।”

“तुम चलो भाभी, मैं गाड़ी लेकर आता हूं।”

सुनीता ने मुड़ते-मुड़ते सुना- “इस रेड एलर्ट कर्फ्यू में तू जाएगा? नहीं जाना है तुम्हें। दूसरों के लिए इतना बड़ा मसीहा बनने की जरूरत नहीं है। शहर पूरी तरह दंगों की आग में जल रहा है। किसी को यह पता नहीं कि कब कहां क्या हो जाए! ऐसी हालत में तुम्हें घर में ही रहना है।”

सुनीता घर लौट आई! उसे समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे! मोहन की मां ने कर्फ्यू के भय से अपने जवान बेटों को पड़ोसी की बीमारी की हालत में जब जाने से मना कर दिया तो भला वह अपनी मां का आज्ञाकारी बेटा कैसे उसकी मदद कर पाएगा! लेकिन उसकी आशा के अनुरूप ही मोहन कह रहा था-“एक संपूर्ण जिंदगी से खतरे थोड़े ही बड़े होते हैं।”

“लेकिन तुम्हें इस रात में नहीं जाना है।”

मोहन इस विषय पर अपनी दिल की मरीज मां से कोई तर्क-वितर्क नहीं करना चाहता था। वह चुपचाप अपने कमरे तक लौट गया। वह जानता था, इस विषय पर मां से तर्क करने पर उसे भी सदमा लग सकता है। वह ऐसा ही कुछ सोचते हुए मां के सामने अपने कमरे में चला गया।

नारी किसी के दुःख में जितनी जल्दी दुखी होती है, उतनी ही जल्दी उसकी सहानुभूति अपने स्वार्थ से टकराने पर मिट भी जाती है। सुनीता विवश थी उस अनचाही सहायता का बाट जोहने को। वह न चाहकर भी बाध्य थी उस नकारात्मक, अपमानजनक और निर्मम मदद की अपेक्षा के लिए। वह बड़बड़ाते हुए अपने घर की चौखट तक आ गई। आशंका और जीवन के प्रति कल्पित भय के मिले-जुले तनाव से वह घबरा उठी। क्या मोहन उसकी सहायता के लिए आएगा? आना चाहिए। अगर नहीं आया तो? नहीं, नहीं। वह जरूर आएगा।

तभी हरदयाल के मुख से पुनः दर्द भरी एक चीख उभरी। दौड़ते हुए वह पति के पास पहुंची। हरदयाल को होश आ गया था। वह बेचैनी में कराहते हुए छटपटा रहा था। एक पल भी बिना गंवाए वह अन्य पड़ोसियों के घर दौड़ी। पर सब व्यर्थ। किसी ने बहाना बना दिया तो किसी ने मजबूरी बताई।

समाज में अपना कोई नहीं? क्या सभी जग वाले सिर्फ अच्छे समय में ही काम आते हैं? उनका कोई दायित्व नहीं? मध्यमवर्गीय परिवार में क्या एकाकी होना दुर्भाग्यपूर्ण है? अगर मेरे बेटे भी जवान होते तो क्या वे कर्फ्यू के डर से अपने बाप को डॉक्टर के पास नहीं ले जाते? प्राणों के भय से उन्हें मर जाने देते? आज अपना देवर ही होता तो वह भी क्या दुनिया वालों की तरह ही करता? वह अपने भाई को हर कीमत पर बचाने की कोशिश न करता? सोचते-सोचते सुनीता का मन तिक्त हो उठा।

कितना ख्याल रखता था संजू इनका। थोड़ी-सी सर्दी होने पर चिंतित हो उठता था। परंतु हाय रे किस्मत! ये तो अपने शक के निराधार कारणों से मुझे लेकर यहां चले आए। उसकी भी इच्छा तो यही थी कि भैया-भाभी के पास रह कर ही पढ़ूंगा। कितनी यातना सहनी पड़ी थी मुझे उसे साथ रखकर पढ़ाने की वकालत करने पर। सोचों की दिशा बदली। मौत की लटकती तलवार का ध्यान आते ही वह फिर बेचैन हो गई। दौड़ी हुई दरवाजे तक आई, लगा कि कोई उसकी सहायता के लिए आ रहा है। दुःख, भय, चिंता और प्रतीक्षा में मनुष्य के भीतर कल्पित सहाय्य की भावना सक्रिय हो जाती है।

मोहन जब इस बात से आश्चर्य हो गया कि उसकी मां अपने कमरे में चली गई है तो वह धीरे से अपने कमरे से बाहर आया। अपने नौकर को कुछ समझा कर भीतर से दरवाजा बंद कर लेने के लिए कह कर बाहर आ गया। वह गाड़ी तो ले नहीं जा सकता था, इसलिए किसी दूसरे साधन की व्यवस्था करनी थी। वह कुछ दूर चलते हुए किसी साधन की तलाश करता रहा, पर कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था। थोड़ी दूर और जाने पर सड़क के किनारे उसे एक रिक्सा दिखाई दिया। रिक्सा वाला अपने रिक्से पर ही सोया हुआ था।

“ऐ रिक्से वाले भाई! एक मरीज को अस्पताल तक पहुंचा दो।” मोहन ने गिड़गिड़ाते हुए उससे विनती की*

“दिमाग खराब है? इस कर्फ्यू की स्थिति में रिक्सा चलाऊंगा? उसने डर के मारे प्रलोभनों और मनुष्यता की तिलांजली दे दी।

मोहन को बड़ा कष्ट हुआ। वह गाड़ी नहीं ला सकता था क्योंकि उसकी मां ने उसके चले जाने के भय से उसकी चाभी अपने पास रख ली थी। पर वह ऐसी स्थिति में सुनीता की सहायता नहीं करना मानवता के विरुद्ध समझता था। उसके दिमाग में कहीं विचारों का अंधड़ चल रहा था। अगर समय से वह न पहुंचा तो...? कौन जिम्मेवार होगा यदि हरदयाल की मौत हो गई? सुनीता तो सुनीता, उसकी आत्मा तक उसे माफ नहीं करेगी। समय का ख्याल आते ही वह बेचैन हो उठा। उसने सोचा, क्यों न इससे रिक्शा ही मांग लूं। शायद दे दे। पर रिक्से वाला उस पर भी तैयार नहीं हुआ। बाध्य होकर मोहन ने अपने हाथ की कीमती अंगूठी रिक्से वाले को देते हुए सिर्फ रिक्शा ही दे देने की प्रार्थना की। इस पर भी वह मुश्किल से तैयार हुआ।

रिक्सा पर बैठ कर मोहन ताबड़-तोड़ पैडल मारने लगा। जीवन में वह रिक्से पर बैठा तो था, पर रिक्सा कभी चलाया नहीं था। रिक्से का हैंडल कभी इधर तो कभी उधर भटक जाता था। सड़क सुनसान होने से ज्यादा परेशानी नहीं हुई।

मोहन ने हरदयाल को किसी तरह उठा कर घर से बाहर निकाला और रिक्से पर डाल दिया। सुनीता को भी बैठ जाने को कहा। सुनीता अपने दोनों सोए बच्चों को पड़ोसी को देखने को कह दिया।

“रिक्सा वाला कहां है?”

“नहीं है।”

“फिर...?”

“मैं चलाऊंगा, तुम बैठो।”

समय किसी बहस का नहीं था। अतः वह हरदयाल को पकड़ कर वह रिक्से पर बैठ गई।

रात के बारह बजे रहे थे। बीच-बीच में कुत्ते, टिटिहरियों एवं उल्लुओं के बोलने की आवाजें आ रही थी। रास्ते में पहरा देने वालों ने कई जगह रोका, मगर स्थिति देख कर जाने दिया। पर सरकारी अस्पताल में कोई डॉक्टर नहीं था, जो आपात रोगियों को संभालता।

मोहन किसी से पता पूछ कर नजदीक के डॉक्टर के निवास पर पहुंचा। डॉक्टर किसी तरह नींद से तो जागा, पर उसने बताया कि इस समय उसकी ड्यूटी नहीं है। इसलिए अस्पताल नहीं जाएगा। उसने कितनी भी विनती की मगर वह मानने को तैयार नहीं था।

डॉक्टर मोहन को झिड़क कर घर के भीतर लौटने ही वाला था कि मोहन ने उसके पीछे से गाउन को पकड़ा एवं गुराया- “अबे साले! डॉक्टर के बच्चे! अगर मेरा रोगी मर गया तो मैं तुझे जिंदा दफन कर दूंगा!”

डॉक्टरों के जीवन में रात को मरीज देखने के कई अवसर आते हैं, लेकिन उसके जीवन में यह पहला वाकया था कि किसी ने उसे भयवश मरीज को देखने जाने के लिए विवश कर दिया। डॉक्टर को डर के मारे घिग्घी बंध गई थी और वह बाध्य होकर चलने को तैयार हुआ।

हरदयाल अब भी बेहोश था। डॉक्टर ने होश में आने की दवा दी। फिर होश आते ही उसने दर्द रोकने का दवा दी और दो घंटे बाद घर पर रिपोर्ट देने को कहा।

दो घंटे बाद मोहन ने जब डॉक्टर को रिपोर्ट बताई तो उसने रोगी को खतरे से बाहर बताया। मोहन भागा-भागा अस्पताल आया और सुनीता को इसकी सूचना दी। लेकिन साथ ही उसने यह भी कहा-“भाभी, मैं घर जा रहा हूं। रिक्से वाले को उसका रिक्सा भी लौटाना है।”

“रुक नहीं सकते?”

“नहीं। मैं मां से छुप कर आया हूं।” और वह तेज कदमों से लौट पड़ा।

सुनीता मोहन को जाते देखती रही। अगर वह न आता तो? सोच कर एक बार वह फिर कांप गई। फिर अगले ही पल प्रफुल्लित होकर उस मसीहा को मन ही मन बहुत सारा धन्यवाद दे डाला।

लालच का फल

एक समय की बात है। किशन नाम का एक लालची आदमी किसी गांव में रहता था। वह मेहमानों से कतराता था क्योंकि उनकी आवभगत में उसे कुछ न कुछ खर्च करना पड़ता था। उसकी कंजूसी के चर्चे आस पास के गांवों में फैल चुकी थी। एक दिन पास के गांव के हजारिया नामक व्यक्ति ने उसे बेवकूफ बनाने का निर्णय किया। हुआ यह कि जैसे ही उस लालची की बीवी ने खाना परोसने की बात की हजारिया उनके घर पहुंच गया और बोला सरकार — मैं भूखा हूं पिछले 3 दिनों से कुछ नहीं खाया।

किशन ने श्वास छोड़ते हुए कहा — पिछले 3 साल से मुझे बहुत घाटा हुआ है। इस साल भी फसल बर्बाद हो गई है माफ करना भाई घर पर अनाज बिल्कुल नहीं है। हजारिया चला गया पर थोड़ी दूर जाकर वापस लौट आया। इस बीच में लालची खाने पर बैठ चुका था। हजारिया को लौटते देख उसने तुरंत अपने पत्नी को पुकारा-- जल्दी से यह खाना उठा लो और ले जाओ और जब वह आदमी आए तो कहना अभी-अभी मेरी मौत हो गई है।

आदमी के आते ही पत्नी बोली — अभी अभी मेरे पति का देहांत हो गया। हजारिया बोला — अरे तब तो मुझे इनकी कब्र खोदने में आपकी मदद करनी चाहिए। लाइए फावड़ा दीजिए और वह जमीन खोदने लगा। फिर उसने जिंदा आदमी को मुर्दा समझकर उस में डाल दिया। कुछ देर में उसके जाने के बाद उस औरत ने अपने पति को निकाल लिया। आदमी लाख कोशिशों के बाद भी मेरे घर में भोजन नहीं कर सकता किशन बोला। जाओ मेरा भोजन ले आओ, अब मैं आराम से खा सकूंगा। लेकिन उसने खाना शुरू किया तो वह हजारिया फिर आ धमका। उस लालची आदमी ने जल्दी से अपना भोजन पेट में उड़ेल लिया। अब गरम भोजन से उसका पेट जल गया। हजारिया बोला — पहले आपने आनाज ना होने का ढोंग किया, फिर मरने का लेकिन आपके पेट को देखकर लगता नहीं कि आपके घर में अनाज की कमी है।

अच्छा तो सुनो लालची आदमी ने साफ साफ कह दिया-- आदमी चाहे भूत ही क्यों ना हो मेरे घर में भोजन नहीं कर सकता। यह सुनकर हजारिया चला गया। वह भूतों के प्रदेश में गया जो मनुष्य के कट्टर दुश्मन थे। उसे देखते ही सारे भूत हाथों में तलवार लिए उसे घेर कर खड़े हो गए। मैं आपको कष्ट नहीं पहुंचाना आया हूं मैं सिर्फ उस व्यक्ति के बारे में बताने आया हूं जिसे आपकी निंदा करते हुए कोई भय नहीं होता। कौन है वह ? भूतों ने हैरानी से पूछा। वो बड़ा ही लालची है उसने कसम खाई है कि इंसान तो क्या भूत भी उसके घर खाना नहीं खा सकता। ऐसी बात है, अच्छा तुम अपने गांव जाओ हम उनसे निपट लेंगे। अगली रात उस लालची आदमी के घर जाकर प्रेतों ने उसका सारा आनाज चुरा लिया। दूसरे दिन इस बात का पता लगने पर लालची आदमी ने चोरी के विषय में मुखिया को बताना चाहा। वह जब मुखिया के घर जा रहा था गांव के रास्ते में उस की भेंट प्रेत से हो गई जो मनुष्य के वेश में था। लालची ने अपने दुर्भाग्य की कहानी उसे बताई। तुम अपने मुखिया के पास जाओ और उससे सलाह लो- प्रेत ने कहा और फिर उसने कहा अगर अपना अनाज नहीं मिला तो तुम उसी के दरवाजे पर बैठे-बैठे दम तोड़ दो।

किशन मुखिया के घर पहुंचकर बोला — मुखिया मेरा कोई धन चुरा लिया है अगर आप ने चीजें वापस नहीं दिलाई तो मैं आपके दरवाजे पर अपना दम तोड़ दूंगा। मुझे माफ करना लेकिन तुम्हारा धन किसने चोरी किया है यह मुझे कैसे पता चल सकेगा। यह सुनते ही किशन ने मुखिया को डराने के लिए मरने का नाटक किया। उसने इतना अच्छा अभिनय किया कि मुखिया ने उसे सच में मरा समझ कर दफनाने की आज्ञा दे दी। गांव वालों ने किशन को जमीन में इतना नीचे दफन कर दिया कि फिर वह अपने क़ब्र में से कभी बाहर नहीं निकल पाया। उस दिन से उस गांव के लोग अजनबी के खाना मांगने पर उसे कभी मना नहीं करते।

— कृतिका तुलसी

बुद्धि का बल

सालों पहले की बात है। सुंदरवन के एक छोटे से गांव में एक गरीब बुढ़िया रहती थी उसका नाम जानकी था। वह घर घर काम करती थी पर ज्यादा नहीं कमा पाती थी। एक तो बढ़ती उम्र, काम का दबाव ऊपर से खाना भी ठीक से नसीब नहीं होता था। ज्यादातर तो वह बीमार ही रहती थी। जानकी की एक बेटी भी थी जिसका विवाह दूसरे गांव में हुआ था। जानकी को लगने लगा कि वह अब अधिक दिनों तक जीवित नहीं रहेगी। उसे अपनी बेटी शोभा की याद आने लगी। एक दिन जानकी ने किसी तरह हिम्मत जुटाई और शोभा से मिलने निकल पड़ी।

शोभा के गांव को जाने वाला रास्ता जंगल के अंदर से होकर जाता था। जानकी धीरे धीरे जंगल की ओर चल पड़ी। अभी ज्यादा दूर गई भी नहीं होगी कि पीछे से आवाज आई — रुको। जानकी के पैर डर के मारे रुक गए। जैसे ही वह पीछे मुड़ी उसने देखा उसके सामने भालू खड़ा है, काला मोटा 7 से 8 फीट लंबा। जानकी डर के मारे कांपने लगी। भालू ने कहा — मैं बहुत भूखा हूं, मैं तुम्हें खाऊंगा।

जानकी पहले तो डर गई फिर खुद को संभालते हुए बोली— भालू भाई, मैं अपनी बेटी के घर जा रही हूं वहां जाकर अच्छे से खा पी कर मोटी तगड़ी होकर आऊंगी तब तुम मुझे खा लेना अभी तो सिवाय हड्डियों के तुम्हें कुछ भी नहीं मिलेगा।

भालू सोच में पड़ गया काफी सोचने के बाद भालू ने कहा — ठीक है जाओ मैं यही तुम्हारा इंतजार करूंगा। वैसे तुम कितने दिनों बाद लौटोगी।

जानकी ने कहा — एक महीना, यह कहकर वह आगे चल पड़ी। थोड़ी दूर चलने के बाद पीछे से जानकी को किसी ने आवाज लगायी। पीछे मुड़कर जानकी ने अपने सामने सुंदरवन के विशाल अजगर को पाया। अजगर सांप ने भी जानकी को खाने की इच्छा जाहिर की। जानकी ने फिर चालाकी से अपने आपको अजगर के चंगुल से बचा लिया। आगे जंगल में जानकी को मगरमच्छ और जंगल का राजा शेर भी मिला जिसके हाथों से वह अपने आपको बच बचा कर अपनी बेटी के घर पहुंची।

मां से मिलकर शोभा को बहुत ही खुशी हुई। पहले ही दिन से शोभा अपनी मां की सेवा में लग गई और हर रोज दूध, मक्खन, हरी सब्जियां, फल आदि खिला-खिला कर जानकी के स्वास्थ्य में परिवर्तन ला दिया। 20-25 दिनों में ही जानकी गोल मटोल और स्वस्थ हो गई। जैसे-जैसे महीना खत्म होने को आया जानकी की चिंता बढ़ती गई। जानकी को चिंतित देखकर शोभा ने उससे कारण पूछा। बहुत पूछने पर जानकी ने शोभा को जंगल में हुई सारी बातें बताई। शोभा बहुत ही बुद्धिमान थी। उसने कहा — मां तुम चिंता मत करो, मैं सब ठीक कर दूंगी, तुम सकुशल घर पहुंच जाओगी।

जिस दिन जानकी को लौटना था उस दिन सुबह-सुबह अपने खेत में से सबसे बढ़िया कोहड़ा उठाकर लाई और उसे साफ कर अपनी मां को कोहड़े के अंदर बैठने को कहा। जानकी उसके भीतर बैठ गई। शोभा ने ऊपर से कोहड़े को बंद कर दिया और जोर से धक्का मार दिया। कोहड़ा लुढ़कते हुए जंगल की ओर चल पड़ा। रास्ते में शेर इंतजार में था अपनी ओर कोहड़ा को आता देखकर वह हैरान हो गया। वह झट से आगे बढ़कर लुढ़कते हुए कोहड़ा को रोक लिया। शेर काफी देर तक कोहड़ा को इधर उधर से देखा पर कुछ उसे समझ में नहीं आया। उसने गुस्से में कोहड़े को लात मारकर आगे लुढ़का दिया। वह लुढ़कता हुआ आगे चल पड़ा। इस तरह से एक-एक कर मगरमच्छ, भालू को भी चकमा देती हुई जानकी कोहड़े में बैठी अपने घर पहुंच गई। शोभा की बुद्धिमानी और जानकी की चालाकी की वजह से जानकी की जान शेर, मगरमच्छ, और भालू से बच गई।

— डेजी सरकार विश्वास

गट्टू की बुद्धिमानि

बहुत समय पहले की बात है, मोहक वन में गोलू नामक एक बूढ़ा खरगोश रहता था। वह इतनी अच्छी कहानियां सुनाता था कि जंगल के सारे पशु-पक्षी उन्हें सुनकर दातों तले उँगली दबा लेते थे। उसी वन में एक ज्ञानी तोता भी रहता था। उसका नाम था हरिता। तोता भी खरगोश के ज्ञान का लोहा मानता था। गोलू खरगोश ने वाद विवाद में कंचन कोयल और मठरी मैना को हरा कर अपनी श्रेष्ठता साबित की थी। इसी कारण जंगल का राजा शेर भूकंप सिंह भी उसका आदर करता था। पूरे दरबार में खरगोश जैसा विद्वान कोई दूसरा न था। धीरे-धीरे उसे अपनी विद्वत्ता का बड़ा घमण्ड हो गया।

एक दिन उसे बड़े जोरो की भूख लगी थी और वह बड़े सवेंरे खाने की तलाश में निकला। सर्दियों के दिन थे। चारों ओर कोहरा छाया हुआ था। सूरज चाहकर भी अपनी रोशनी बिखेर नहीं पा रहा था। मौसम में कंपकपी बढ़ती जा रही थी। सड़क के किनारे संतरों के पेड़ों पर पीले-पीले संतरे लदे हुए थे। बड़े-बड़े, रसीले संतरो को देखकर गोलू के मुँह में पानी भर आया। एक संतरे के पेड़ के नीचे जाकर उसने आँखें उठाई और ऊपर देखा तो उसे एक मैनों का एक झुण्ड संतरों पर मंडराता हुआ दिखाई दिया। बूढ़े खरगोश ने नीचे से आवाज़ दी—प्यारी मैना, मेरे लिये भी एक दो संतरा तोड़ कर गिरा दो।

उन मैनों के झुंड में से गट्टू नाम की एक मैना बड़ी शरारती और चंचल थी। वह ऊपर से ही बोली— ताऊ जी, आप यह तो बताइये कि आप कौन से रंग के संतरे खायेंगे?

गोलू खरगोश हैरान होकर बोला— भला संतरे भी कहीं अलग अलग रंगों के होते हैं? मुझसे मज़ाक न करो। बहुत जोरों की भूख लगी है मुझे थोड़े से संतरे गिरा दो।

गट्टू बोला — अरे ताऊ, आप ठहरे इतने बड़े ज्ञानी। यह भी नहीं जानते कि संतरे लाल भी होते हैं, और नीले भी। पहले आप बताइये कि आपको कौन से रंग के संतरे चाहिए? इसे जाने बिना मैं आपको कैसे संतरे दूँगी? बूढ़े और ज्ञानी खरगोश की समझ में बिल्कुल भी न आया कि संतरे भला लाल और नीले रंग के कैसे होंगे?

फिर भी वह उस रहस्य को जानना चाहता था इसलिये बोला—बेटी, तुम मुझे नीले वाले संतरे ही खिला दो लाल वाले तो मैंने बहुत खाए हैं।

गट्टू ने बूढ़े गोलू की यह बात सुनकर संतरे की एक डाली को ज़ोर से हिलाया। पके-पके संतरे नीचे फैली धूल में लिपटकर नीले से दिखने लगे। गोलू उन्हें उठाकर धूल पोंछ पोंछ कर खाने लगा। यह देखकर गट्टू ने पूछा—क्यों ताऊ जी, संतरे नीले हैं न?

कहाँ बेटी ? ये तो वही पीले वाले संतरे ही हैं। खरगोश बोला।

नन्हें गट्टू ने चौंक कर पूछा—क्या कहा पीले हैं? तो फिर आप इन्हें पोंछ पोंछ कर क्यों खा रहे हैं? इस तरह तो सिर्फ रंग लगी चीज़ें ही खाई जाती हैं।

नन्हीं मैना की बात का रहस्य अब जाकर बूढ़े खरगोश की समझ में आया और वह बड़ा शर्मिन्दा हुआ। इतना ज्ञानी बूढ़ा गोलू खरगोश जरा सी बात में छोटी सी मैना से हार गया था। उसका घमण्ड दूर हो गया और उसने एक कविता लिखी बरगद का कड़ा तना, कट जाता आरी से। लेकिन वो आरी ही कभी कभी घिस जाती कोमल बाली से। बड़ा हुआ तो क्या हुआ छोटे भी, कुछ कम नहीं कभी कभी छोटों से बढ़कर बड़े भी होते नहीं।

— स्मृति कुमारी

साधु का हठ

एक गांव था, नाम था चिकोटी। इस गांव का नाम चिकोटी कैसे पड़ा इस पर अलग अलग कहानियां हैं। कोई कहता है कि गांव के लोग एक दूसरे की चुटकी लेते थे हर बात पर इस कारण नाम इसका नाम चिकोटी पड़ा जबकि कुछ लोगों का मानना था कि गांव में चीकट नाम के एक साधु रहा करते थे उन्हीं के नाम पर यह नाम पड़ा। आज भी वह आश्रम है। आश्रम में एक बूढ़े साधु निवास करते थे। साधु बाबा का परमात्मा में अटल विश्वास था। लोग उन्हें एक तरह से परमात्मा का ही दूसरा रूप मानते थे। उनके वचनों के साथ-साथ उनके तौर तरीकों में भी भगवान के प्रति गहरी आस्था झलकती थी। उनके अनुयायी उनका आशीर्वाद लेने के लिए दूर-दूर से आते थे।

एक बार गांव में बहुत तेज बरसात हुई। बरसात रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। पूरे इलाके में बाढ़ का खतरा मंडराने लगा। तीन दिनों से लगातार हो रही बारिश से बाढ़ का खतरा मंडराने लगा। गांव के लोग घर छोड़ सुरक्षित स्थानों पर भागने लगे। लगातार बारिश के बीच गांव का सरपंच साधु बाबा के पास अपनी बग्गी लेकर आया और उनसे पास के पहाड़ी के ऊंचे स्थान पर चलने की विनती की।

साधु ने कहा — आप गांव में रह रहे लोगों को लेकर पहाड़ी पर जाएं। मेरे साथ ईश्वर है। वो मुझे कुछ नहीं होने देंगे।

साधु बाबा के आदेशानुसार गांव के लोग पहाड़ी पर चले गये। बारिश लगातार जारी रही। नदी-नाले उफान पर आ गये। गांव की आबादी लगभग खाली हो गयी। आश्रम तक भी पानी पहुंच गया लेकिन साधु बाबा अपनी ईश्वर भक्ति में लीन रहे। साधु का एक भक्त नाव लेकर उनके पास आया और चलने का अनुरोध किया। उसने साधु बाबा से कहा — बाढ़ का पानी कुटिया तक पहुंच चुका है कभी भी भीतर पहुंच सकता है कृपया सुरक्षित स्थान पर चलिए। अगर आप नहीं चलेगे तो पानी में यह कुटिया भी डूब सकती है।

साधु बाबा ने सब भगवान की लीला है कह कर उसके अनुरोध को ठुकरा दिया। भक्त निराश होकर चला गया। बारिश के कहर से नदियां अपने उफान पर आ गईं।

कुदरत का कहर इस तरह बरपा कि किसी को कुछ और समझ में नहीं आ रहा था। बारिश के कारण पानी आश्रम के भीतर तक घुस आया। अब साधु बाबा को मजबूरन कुटिया की छत पर चढ़ना पड़ा। उसी दौरान साधु बाबा का एक और भक्त अपने साथ पालकी और चार लोगों को लेकर आया और बोला — साधु बाबा, अब तो निकलिए कभी भी कुटिया ढह सकती है। कृपया सुरक्षित स्थान पर चलिए।

साधु बाबा ने कहा — सब परमात्मा की मर्जी है। उसी की लीला है। परमात्मा ही सब ठीक करेगा।

साधु का उत्तर सुन कर भक्त निराश होकर चला गया। उसके जाने के बाद साधु ध्यान की मुद्रा में बैठ गये। उन्होंने आंखें बंद कर परमात्मा को याद किया और बोले— प्रभु, जीवन में आपने हमेशा मेरी मदद की। लेकिन जब मुझे आपकी मदद की सबसे ज्यादा जरूरत थी आपने मेरी मदद नहीं की। यह आपकी क्या लीला है।

तभी आकाशवाणी हुई और आवाज आई— अरे मूर्ख, तुझे क्या लगता है मैंने तुम्हारी मदद नहीं की? इस बाढ़ से निकालने के लिए पहले बग्गी, फिर नाव और अब पालकी किसने भिजवायी थी। मैंने तो पूरी मदद की कोशिश की लेकिन तुमने ही उसे ठुकरा दिया। अब तुम्हारे भाग्य में जो लिखा है उसे तुम्हें भुगतना होगा। इसके बाद आकाशवाणी बंद हो गयी और एक पानी का सैलाब आया और साधु को कुटिया समेत बहाकर ले गया।

रीछ का आतंक

हिमाचल प्रदेश की सुरम्य वादियों में एक पहाड़ी के नीचे एक सुंदर, हरा भरा गाँव बसा था- नाम था लालीपुर। वहाँ सभी लोग बहुत मिल जुल कर रहते थे। गाँव की एक समस्या थी। एक रीछ पहाड़ी के पीछे रहता था जो शाम होते ही पहाड़ी से नीचे आकर बच्चों को उठा ले जाता था। मायें बहुत परेशान रहती थी। कोई बच्चा शाम को घर से बाहर देर तक नहीं रह पाता जिससे उन्हें खेलने का मौका भी नहीं मिलता था। वे शाम होते ही घर में दुबक जाते। सभी रीछ से त्रस्त रहा करते थे।

उसी गाँव के एक घर में दो लड़के अपने मां के साथ रहते थे। नाम था टुनटुन और सिक्का। गोल मटोल, गोरे रंग के सेव से दिखने वाले दोनों भाइयों में बहुत प्यार था और वे हमेशा मां का कहा सुनते थे। एक बार गाँव में सरपंच के बच्चे का जन्मदिन था। उसने गाँव के सभी बच्चों को अपने बच्चे के जन्म दिन पर बुलाया। टुनटुन और सिक्का को भी निमंत्रण आया। टुनटुन और सिक्का की माँ ने उनके के लिये सुंदर कपड़े निकाले और उनको जाने के लिये तैयार किया। उनकी मां को मंत्र-तंत्र का ज्ञान भी था जिसका इस्तेमाल सिर्फ़ भले कामों के लिये ही करती थी। न्यौते पर जाने से पहले टुनटुन और सिक्का को उनकी मां ने एक जादू का मफलर दिया और कहा— इन मफलरों को गले से उतारना नहीं। इन मफलरों को जब तक तुम लोग पहने रहोगे, तुम्हें रीछ हाथ भी नहीं लगा सकता। मगर शाम से पहले घर आ जाना, देर मत करना। टुनटुन और सिक्का दोनों मां के दिये कपड़े और मफलर पहन कर जन्मदिन के जश्न पर चले गये। जन्मदिन का जश्न जब खत्म हो गया और शाम होने लगी तो सभी बच्चे अपने-अपने घर जाने लगे।

टुनटुन और सिक्का भी घर की तरफ़ बढ़ने लगे। रास्ते में अचानक सिक्का का हाथ उसके गले पर गया तो वो चीख उठा। उस के गले पर मफलर नहीं था। दोनों भाई घबरा गये। तब टुनटुन ने सिक्का से कहा, तू यहीं रुक, मैं अभी वो मफलर ले कर आता हूँ। लगता है जिस पेड़ के नीचे हम खेल रहे थे वहाँ गिर गया होगा। टुनटुन दौड़ कर उस पेड़ के नीचे मफलर ढूँढने चला गया। सिक्का वहीं रुक कर टुनटुन का इंतज़ार करने लगा। पेड़ के चारो ओर झाड़ियों के पीछे टुनटुन ने हर तरफ़ देखा। आखिरकार उसे मफलर एक फूल के पौधे के नीचे पड़ा मिला। टुनटुन ने दौड़ कर उस मफलर को उठा लिया और उसे अपने गले में लपेटने ही वाला था कि पीछे से उसका हाथ दो मजबूत हाथों ने पकड़ लिया। हा हा हा, मुझसे कैसे बचोगे। मैं आज तुम्हें पकड़ कर भून कर खाऊँगा। रीछ ने टुनटुन को पकड़ लिया, और अपने बोरे में डाल कर अपनी पहाड़ी की ओर चल पड़ा।

उधर सिक्का ने देखा कि बहुत देर हो गई है अब तक टुनटुन नहीं आया तो उसे शक हो गया कि टुनटुन को शायद रीछ ने पकड़ लिया है। वो भाग कर अपने घर चला आया और घर जा कर उसने अपनी मां को सारी बातें बताईं।

टुनटुन और सिक्का की मां ने अपनी तंत्र की छड़ी घुमाई। सारे गाँव में तंत्र का प्रभाव फैल गया। रीछ सम्मोहित होकर अपने घर का रास्ता भूल गया और कई कोशिशों के बाद भी पहाड़ी पर जाने के रास्ते से टुनटुन और सिक्का के घर के दरवाज़े पर पहुँच गया। आखिर में थक हार कर रीछ ने उनके घर का दरवाज़ा खटखटाया। सम्मोहन के मारे उसे कुछ समझ में नहीं आ रहा था। उसने सोचा कि आज की रात इसी घर में काटी जाये। टुनटुन व सिक्का की मां ने दरवाज़ा खोला। रीछ को बड़े ज़ोरों की नींद आ रही थी। उसने घर में घुसते ही सोने के लिये जगह माँगी। टुनटुन की मां ने उसे फ़र्श पर पड़ा एक लकड़ी का ढेर दिखा दिया। रीछ वहीं पर निद्राल होकर सो गया।

रीछ के सोते ही, टुनटुन और सिक्का की मां ने रस्सी से बँधे बोरे को खोला— टुनटुन को उसमें से निकाला और उसमें एक बड़ा सा भैस का बछड़ा डाल कर बोरे को फिर से बंद कर दिया। अगली सुबह, रीछ घर से किसी को बिना कुछ बोले ही निकल गया और अपने घर की ओर जाने लगा जो पहाड़ी के पीछे था। पहाड़ी चढ़ते वक्त उसके पीठ पर

भारी दबाव पड़ रहा था। रीछ ज़ोर से हँसे जा रहा था — हा हा हा, तू छोटा सा लड़का, मुझे क्या लात मार रहा है, मैं तो अभी तुझे घर जा कर पका कर खा जाऊँगा, बस थोड़ी देर और...हा हा हा। रीछ की भयानक आवाज़ सुन कर पहाड़ी कांप गयी। रीछ को लगा कि लड़का रो रहा है। उसने फिर कहा— हा हा हा, तू छोटा बच्चा, अब रोना बंद कर, मैं तो अभी तुझे घर जा कर जला कर खा जाऊँगा, बस थोड़ी देर और...हा हा हा। जब उसके पीठ दर्द से दुखने लगा— तो रीछ ने फिर कहा, —हा हा हा, तू मुझे क्या नोचेगा, मैं तो अभी तुझे घर जा कर भून कर खा जाऊँगा, बस थोड़ी देर और ... हा हा हा।

घर पहुँच कर रीछ ने अपनी पत्नी से कहा— सुनती हो, ज़रा इस बोरे से बच्चे को निकाल कर भून कर लाओ, अच्छा नाश्ता मिला है आज। रीछ की पत्नी जैसे ही बोरे को खोलने गई वैसे ही उसमें बंद बछड़ा कूद कर बाहर आ गया और देखते ही देखते उस बछड़े ने एक विशालकाय साँप का आकार ले लिया।

रीछ की पत्नी डर गयी और उससे बोली—ना बाबा, मुझे तो डर लगता है, कितना भयंकर साँप है।

रीछ ज़ोर से हँसा और बोला— अरे, तुम इतने से ही डर गईं, मैं इसे अभी पकड़ लेता हूँ नहीं रहूँगा जब तब जाने तुम लोगों का क्या होगा साँप की फुफंकार बढ़ती जा रही थी आखिरकार उसने देखते ही देखते रीछ और उसकी पत्नी को अपने मुँह में भर लिया और बड़े आराम से उसे खा लिया। इस तरह रीछ का आतंक लालीपूर से खत्म हो गया और सभी लोग खुशी खुशी रहने लगे।

— कुमारी ऋचा

चुटकुले

पापा : बेटा, आज तुम स्कूल क्यों नहीं गए?

बेटा : आज मेरी टीचर का बर्थ डे है। इसलिए मैंने गैरहाज़िर रह कर उनको राहत की सांस लेने का मौका देना उचित समझा।

000

शेखर शेखी बघार रहा था : कल मैंने अपनी बहन को घुटनों के बल चलने को मजबूर कर दिया।

रमेश : तुमने उसको बहुत मारा था क्या?

शेखर : नहीं, ऐसी बात नहीं है। वह पलंग और सोफों के नीचे झाँक-झाँक कर कह रही थी--निकल चूहे, कहां छिपा है तू!

000

राजू : एक ऐसा काम है, जो दुनिया में सिर्फ मैं ही कर सकता हूँ, और कोई नहीं।

रामू : ऐसा कौन सा काम है?

राजू : अपनी हैंड राइटिंग मैं ही पढ़ सकता हूँ।

000

छेदी : पिछले हफ्ते मेरे दसवें भाई का जन्म हुआ।

बेचन : दसवां? क्या नाम रखा है उसका?

छेदी : पहले तो हम उसे गोपी कहते रहे, पर हफ्ते भर बाद मालूम पड़ा कि यह नाम तो पहले से एक भाई का है। अब हम नया नाम खोज रहे हैं।

000

सफेद साड़ी पहन कर रास्ते से गुजर रही एक जवान नर्स से किसी मनचले ने पूछा--“आप विधवा हुई हैं कब से?”
नर्स शायद कुछ परेशान थी। झल्ला कर बोली--“जब से आप मरे हैं, तब से!”

— मिंटू कुमार

हनुमानजी की कबड्डी

बात उस समय की है जब सीता जी का हरण करके रावण लंका में ले कर चला आया था। श्रीरामचंद्र जी हनुमान सहित वानर सेना के साथ समुद्र तट को पार करके लंका में पड़ाव डाल चुके थे। किंतु अभी तक युद्ध नहीं छिड़ा था। राजनीति के अनुसार दोनों तरफ से दूतों का आना जाना लगा हुआ था। सभी खामोश रहते थे पर बंदरों की सेना को चुपचाप रहना अच्छा नहीं लगता था पर समस्या यह थी कि स्वामी की आज्ञा के बिना कुछ करना भी ठीक नहीं था। समय कटाने के लिए वानर सेना आपस में प्रायः कबड्डी खेला करती थी पर हनुमान जी नहीं खेलते थे।

लेकिन कुछ बंदर आग्रह करते थे कि हनुमान जी आप भी कबड्डी के लिए आइए पर हनुमानजी ऐसा नहीं करते थे और अपना सारा समय श्रीराम की सेवा में ही बिताना चाहते थे। सेना में एक बंदर ऐसा भी था जो हनुमान जी को देख कर हमेशा मुस्कराता रहता था और जब कभी हनुमान जी से बात करता था तो चिढ़ाते हुए बात करता था। इसे हनुमान जी सब समझ रहे थे किंतु बखेड़ा खड़ा होने की वजह से हनुमान जी उससे बचना चाहते थे। परंतु वह वानर अत्यंत कुटिल था और अपनी आदतों से बाज नहीं आता था।

आखिर एक दिन हनुमानजी कबड्डी खेलने को तैयार हो गए। हनुमान जी भी कबड्डी बोलकर दूसरी तरफ जा रहे थे तो वह बंदर बार बार कहने लगा- अरे बाप, ब्रह्मचारी जी आप तो हमारे सभी खिलाड़ी मार डालते हैं...। हनुमानजी ने सोचा बच्चों को आज ऐसी शिक्षा देनी चाहिए कि ये शरारत भूल जाए। हनुमान जी कबड्डी बोल कर उस ग्रुप में गए। भला हनुमान जी को कौन पकड़े यह समस्या कठिन थी। हनुमान जी ने इधर-उधर बुलावा देने के बहाने उस बंदर के गाल पर इतनी जोर से तमाचा मारा कि वह वहीं पर गिर पड़ा।

इस पर कुछ बंदरों ने हनुमान जी से कहा-- आप जंगली की तरह खेलते हैं, किसी को छुआ जाता है न कि जोर से तमाचा मारा जाता है।

हनुमान जी ने कहा - भाई, मैं क्या करूँ मैंने जानबूझकर नहीं मारा। दूसरी बात यह है कि यदि मैं पकड़ा जाता तो मैं मर ही जाता। इसलिए जल्दी में हाथ गाल पर पड़ गया।

उस बंदर ने कहा-- कोई बात नहीं, यह तो खेल है, कभी मेरा भी दिन आएगा। खेल शुरू हो गया। मन ही मन तमाचा खाया बंदर बदला लेने की इच्छा से मौका देखकर खूब जोर की टांग हनुमान जी को मारने की बात सोचा जिससे कि हनुमानजी सारा ब्रह्मचर्य भूल जाएं। वह कबड्डी—कबड्डी कहता हुआ आया। हनुमान जी ने दौड़ कर उसे पकड़ लिया और दोनों हाथों से कंधे पर उठाकर पृथ्वी पर पटक दिया। उस के हड्डियां टूट चुकी थी और उसके बाद भी हनुमान जी उस पर चढ़े रहे। दूसरे बंदरों ने कहा-- छोड़ दीजिए, मर जाएगा।

हनुमान जी ने कहा — नहीं अभी बोल रहा है, तुम लोगों का क्या कहना है। बंदरों ने कहा—इसे तबतक मत छोड़ना जबतक इसकी सांस न टूट जाए। नहीं तो आप मर जाएंगे और हम लोग हार जाएंगे। हनुमान जी ने उस बंदर से पूछा-- क्यों ब्रह्मचारी जी क्या हुआ।

बंदर सब समझ गया कि यह सब कह कर हनुमान जी अपना बदला ले रहे हैं। हनुमानजी ने कहा —अब कभी मुझे कबड्डी खेलने को नहीं कहना वरना....।

यह कहकर खेल समाप्त हुआ।

—बृजमोहन प्रसाद

असफलता के कारण

एक महात्माजी अपने कई शिष्यों के साथ तीर्थाटन पर जा रहे थे। गर्मी का दिन था। दिन चढ़ने के कारण हवा भी गर्म हो चली थी। कुछ दूर जाने के बाद रास्ते में उन्हें प्यास लगी। उन्होंने अपने एक प्रिय शिष्य को बुला कर कहा- “संजय, इस तेज गर्मी की वजह से मुझे प्यास लग रही है। कहीं पास में देखो, कोई नदी-तालाब हो तो मेरे तथा अपने गुरु भाइयों के लिए घड़े में जल लेकर आओ।” प्यास तो संजय को भी लगी हुई थी, परंतु वह गुरुजी के चलते कुछ कह नहीं पा रहा था। लेकिन अब तो गुरुजी ने स्वयं ही उसे जल लाने के लिए कह दिया था। इसलिए वह अपने गुरुभाइयों और गुरुजी को अमराइयों में छोड़ कर सामने ही बहते एक नाले की तरफ घड़ा लेकर जल लाने चल पड़ा। नाले के पास वह जिस स्थान पर खड़ा था, वहां का पानी गंदला होकर बह रहा था। पानी इतना गंदा दिख रहा था कि वह न स्वयं ही पानी पी सका, और न ही घड़े में ही पानी भर सका। कुछ देर तक वह वहीं खड़ा रहा पर पानी के गंदलेपन में कोई परिवर्तन नहीं हुआ तो वह प्यासा ही वहां से निराश हो कर वापस लौट आया।

गुरुजी ने जब पानी के विषय में पूछा तो उसने बताया-“गुरुजी, पानी तो नाले के भीतर बह रहा है पर वह इतना गंदला है कि उस पानी को पिया नहीं जा सकता।” गुरुजी ने पूछा-“तुम कुछ देर रुक कर पानी के साफ होने की प्रतीक्षा करते और पानी जब साफ हो जाता तो लेकर आते।” “नहीं गुरुजी, मैं वहां पर काफी देर तक पानी के लिए खड़ा था परंतु पानी साफ नहीं हो रहा था। इसलिए मैं निराश होकर वहां से वापस लौट आया।” गुरुजी ने कहा - “इस बार फिर जाओ। शायद पानी अब साफ हो गया हो!” संजय खुद भी प्यासा था। इसलिए वह बिना बिलंब किए पुनः पानी लाने के लिए चल पड़ा। नाले के पास पहुंचने पर वह पानी को देखने लगा पर पानी अभी भी गंदला ही बह रहा था। थोड़ी देर तक वह अन्यमनस्क-सा खड़ा रहा और फिर खाली हाथ लौट आया।

गुरुजी ने इस बार अपनी शिष्यमंडली के सबसे होनहार शिष्य सारंध्र को नाले से जल लाने के लिए भेजा* सारंध्र ने संजय के हाथ से घड़ा लिया और नाले की तरफ चल पड़ा। जैसा कि संजय ने बताया था, नाले से अब भी गंदा जल ही बह रहा था। वह भी कुछ देर वहां खड़ा रह कर उसके साफ होने का इंतजार करता रहा लेकिन नाले का पानी साफ होने का नाम ही नहीं ले रहा था। वह कुछ सोच कर वहां से नाले के पानी के स्रोत की ओर चल पड़ा। कुछ आगे जाने पर उसने पाया कि कुछ लड़के नाले में अपनी भैंसों को नहला रहे हैं तथा एक-दूसरे पर मिट्टी लेकर फेंकते हुए खेल रहे हैं। मिट्टी का खेल खेलने के कारण आगे बह कर जाने वाला पानी गंदला हो जाता था।

जहां लड़के खेल रहे थे, सारंध्र वहां से कुछ और आगे बढ़ गया। वहां पानी के बहाव में कोई रुकावट नहीं होने के कारण पानी पूर्णतः दर्पण की तरह साफ दिख रहा था। उसने अपनी अंजली से नाले के साफ पानी को पीया और स्वयं तृप्त हुआ। फिर घड़े को भी पानी से भर लिया और जल लेकर गुरुजी के पास लौट आया। गुरुजी ने पूछा- “सारंध्र, तुम्हें उसी नाले से इतना स्वच्छ पीने लायक पानी कैसे मिला?”

पानी का घड़ा जमीन पर रखते हुए सारंध्र ने कहना शुरू किया कि जब मैं नाले के पास पहुंचा तो पानी उस समय भी गंदला ही आ रहा था। लेकिन उसे देख कर लग रहा था उसके गंदला होने का कारण रास्ते में कोई रुकावट है। इसलिए मैं उस रुकावट को तलाशने के लिए बढ़ चला। कुछ दूर जाने पर मुझे उसके गंदला होने का रहस्य समझ में आ गया। मैंने उससे भी थोड़ा आगे जाकर स्वच्छ पानी पिया तथा घड़े में भर कर ले आया।”

गुरुजी ने सारी बातें जानकर कहना शुरू किया- “मनुष्य का जीवन भी ऐसा ही है। यदि वह जीवन में आने वाली छोटी-मोटी कठिनाइयों को देख कर डर गया तो उसे मनचाहा फल नहीं मिल सकता। यदि कुछ पाना है तो सबसे पहले उसे अपनी असफलताओं के कारणों को जानना चाहिए और फिर उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए।” यदि हमें अपनी असफलता के कारणों का पता चल जाए तो उसे दूर करना कठिन नहीं होगा। इसलिए यदि हम कहीं असफल होते हैं तो सबसे पहले उसका कारण जानना चाहिए। महात्माजी की बातों में जो तथ्य निहित है, वह किसी भी व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है।

हरचनमा

एक लड़का था। उसका नाम हरचनमा था। वह बहुत गरीब था। एक मात्र बूढ़ी दादी ही उसकी थाती थी। वह रोज बकरी चराने जाता तथा शाम को लौटकर चला आता। एक दिन उसे रास्ते में धान की कुछ बालियाँ मिलीं। धान की बाली से उसे अपनी दादी को बगिया बनाने के लिए कहा। दादी ने धान की बाली से बगिया बना दिया। अपने अंगोछे में बगिया रखकर वह बकरी चराने जंगल चला गया। बकरियाँ जंगल में आनंदपूर्वक घास चर रही थी। हरचनमा एक वृक्ष पर चढ़कर गाना गाते हुए बगिया खा रहा था। उसका गाना सुनकर एक बुढ़िया उधर चली आयी। बुढ़िया उस लड़के से रोते हुए स्वर में बोली – ‘बेटा, मुझे बड़ी जोर से भूख लगी है, कुछ खाने को दे बेटा। लड़का डर गया। उसने कहा – ‘जाओ कहीं और। बुढ़िया के फिर खाना मांगने पर लड़का बोला – लो बगिया खाओ। लड़का वृक्ष पर बैठे हुए ही बोला – लो बगिया। लड़का ने वृक्ष पर से ही उसे देना चाहा। बुढ़िया बोली – बेटा, यदि मेरे माथे पर बगिया गिरा तो ढीला (खटमल) खा जाएगा, मुंह में देगा तो मुंह ही खा जाएगा। इसलिए मेरे हाथ में दो बगिया। लड़के को उस पर दया आ गई। उसे जैसे ही नीचे उतरकर बगिया हाथ में देना चाहा, बुढ़िया उसे



अपनी पोटली में बंदकर झटपट अपने घर की ओर चल पड़ी।

जिसका कोई सहारा नहीं होता उसका सहारा ईश्वर होता है। रास्ते में बुढ़िया को मैदान की तलब हुई। बुढ़िया ने हलवाहा से पोटली को थोड़ी देर देखभाल करने को कहा। जब बुढ़िया कुछ दूर चली गई तो, पोटली के अंदर से आवाज आई – बचाओ! हलवाहा ने पोटली खोल दी। बच्चा बाहर निकलकर घर भाग गया। अगले दिन हरचनमा फिर से बकरी चराने के लिए जंगल गया। आज फिर वह उसी वृक्ष पर बैठकर बगिया खा रहा था कि तब तक वही बुढ़िया फिर आ गई। बुढ़िया ने हरचनमा से बगिया मांगी। वह बोला – अरे, तुम तो वही कल वाली बुढ़िया हो न। बुढ़िया बोली— ‘नहीं-नहीं बेटा, तुम्हें धोखा

हुआ है। बुढ़िया द्वारा बार-बार बगिया की मांग करने पर उसने बगिया देना स्वीकार किया। वह वृक्ष पर से ही बगिया देने लगा। बुढ़िया ने फिर वही कल वाली बात दुहरायी। अंत में लड़का लाचार होकर बगिया देने के लिए वृक्ष पर से नीचे उतरा। लड़का ज्योंही नीचे उतरा उस बुढ़िया ने उसे अपनी पोटली में बंदकर लिया और घर चली आई।

बुढ़िया बड़ी खुश थी। उसे एक नातिन थी। अपनी नातिन से बुढ़िया बोली – देखो, लाल भैया आया है। उसे घर में छोड़कर बुढ़िया बाहर चली गई। इस बीच लड़के को मौका मिला। उस लड़की से लड़के ने दोस्ती कर ली। उसकी नातिन के माथे में बहुत जूं थी। उसके माथे को देखकर लड़का बोला- देखो मेरे माथे में एक भी जूं नहीं है। लड़की ने पूछा – ‘कैसे?’ लड़का ने बताया – मेरी दादी ने मेरा माथा ऊखल में डालकर ऊपर से दो-चार मूसल चला दिया, जिससे सारी जूं मर गई। लड़की बहुत खुश हुई। लड़की ने जैसी ही माथा ऊखल में डाला, लड़का ने मूसल मारकर उसका काम तमाम कर दिया। लड़के ने झटपट लड़की के कपड़े पहन लिए।

शाम के समय बुढ़िया लौटकर आयी तो हरचनमा ने उसे मांस-भात खाने को दिया। वह बड़े प्रेम से अपनी नातिन के साथ खाने लगी। तभी एक बिल्ली वहां पर आई और बोलने लगी – राम-राम, छी: छी:, अपनी नातिन का मांस खाती हो। बुढ़िया को गुस्सा आ गया। वह बोली – भागो मुंहजली बिल्ली। नातिन बने लड़के ने उसे दूर भगाया। इसके बाद दोनों साथ-साथ रहने लगे। एक दिन वह नातिन बना लड़का उस बुढ़िया के माथे के जूं को निकाल रहा था। बुढ़िया परेशान थी जूं के चलते। उस लड़के ने उसे कहा मेरे माथे में भी बहुत जूं हो गई थी नानी, मैंने अपने माथे में गरम पानी डाला तो सारी जूं मर गई।

वह बुढ़िया बहुत परेशान थी, माथा नोचते-नोचते। उसने गुस्से में झुंझलाकर कहा- डाल दो मेरे माथे पर गरम पानी। हरचनमा ने खूब गरम पानी उस बुढ़िया के माथे पर डाल दिया। बुढ़िया तो पहले बेहोश हो गई और थोड़ी देर बाद उसकी सांसें थम गई। हरचनमा बड़ा खुश हो गया। बुढ़िया के घर में जो भी सोना-चांदी, हीरा-मोती आदि संपत्ति थी सारा सामान लेकर वह लड़का भाग गया अपनी दादी के पास। दादी बड़ी खुश हुई अपने पोते को देखकर। इतनी संपत्ति पाकर वह लड़का अमीर बन गया तथा बकरी चराना छोड़ दिया।

—शैलेन्द्र राम

बादल

रुई के फाहे सा बादल
मस्ती भरा प्यारा सा बादल
आ बैठा मेरी छत पर, और
उस बादल ने कितने रूप धरे
आज सुनो अरे सुनो ।

कभी वह खरगोश, तो कभी मोर
कभी वह सिपाही, तो कभी चोर
कभी वह भालू, तो कभी आलू
आज सुनो अरे सुनो ।

बादल ने कितने रूप धरे
बादल का रूप निराला
कहीं पे नीला, कहीं पे काला
देख जिसे निकलने को धूप डरे
बादल ने कितने रूप धरे
फिर हुआ वह धुआँ-सा
चेहरा उसका रुआँसा
रो पड़ा वह बुंदों से
बादल ने कितने रूप धरे । — शुभी प्रज्ञा

डूबता सूरज

रमती जहां हैं जीवन की किरणें
साथी यही है, नजरबंद, कैदखाना
कुछ भी कहो
सुख-दुःख के आंसू छलकते यहां

नहाता है, सूरज के साथ
रश्मियों से जीने के लिए,
एक कमरा तो है ।
सुबह आँख खोलने से जीवंत होता
हर वक्त जीता, हर पल मचलता
जीवन को हर वक्त खुशहाल करता
जीने के लिए, एक कमरा तो है ।

ठहरती है जहां ढलती शाम
नहलाती हैं जिसको डूबती लालिमा
गिनता है जीवन घड़ियाँ उसी में
जीने के लिए, एक कमरा तो है ।
बनती जहां हैं जीवन की कड़ियां
जीवन की लड़ियां
जीने के लिए, एक कमरा तो है ।
— सत्य प्रकाश दुबे

भविष्य की आशा

हम बच्चों के भविष्य की आशा है हिंदी
हम हिंदुस्तानी हिंदुस्तान की परिभाषा है हिंदी
अधूरी है दुल्हन बिंदी के बिना
अधूरा है हिंदुस्तान हिंदी के बिना
हमारे सपनों की अभिलाषा है हिंदी
हम हिंदुस्तानी हिंदुस्तान की परिभाषा है हिंदी

हिंदी बोलना हिंदी लिखना हिंदी पढ़ना
हिंदी को कोटि-कोटि प्रणाम करना
शब्दों के भंडार से भरी अच्छी खासी है हिंदी
हम हिंदुस्तानी हिंदुस्तान की परिभाषा है हिंदी
मां हमें हिंदी का विद्वान दो
हिंदी का सर्वश्रेष्ठ ज्ञान दो
हमारे अंतर की जिज्ञासा है हिंदी
हम हिंदुस्तानी हिंदुस्तान की परिभाषा है हिंदी ।
— पुरुषोत्तम राजमणी

राजभाषा पखवाड़ा के दौरान मालदा मंडल द्वारा आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी तथा हिन्दी दिवस के अवसर पर संकल्प दिवस के आयोजन से संबंधित कुछ दृश्य



मालदा मंडल द्वारा आयोजित राजभाषा प्रदर्शनी तथा हिन्दी दिवस के अवसर पर
संकल्प दिवस के आयोजन से संबंधित कुछ दृश्य

